एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 10 (अक्टूबर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

रबी दलहनी फसलों मे एकीकृत कीट प्रबंधन

*डॉ. अभिषेक यादव एवं डॉ. अनिल कुमार पाल
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया-उत्तर प्रदेश, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhicoa2@gmail.com

भारत में उगाई जाने वाली फसलों में दलहनी फसलों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। ये फसलें सामान्यतः प्रोटीन की प्रमुख स्रोत मानी जाती हैं। अतः इनकी उत्पादकता एवं उत्पादन को घटाने में कीटो एवं रोगो का महत्वपूर्ण स्थान है। कीटो के द्वारा फसल को प्रतिवर्ष 20 से 30 प्रतिशत तक हानि होती है। बदलते मौसम के कारण कीटों का उचित समय पर प्रबन्धन कर अच्छा उत्पादन कर सकते है। रबी दलहनी फसलों में उत्पादन स्थिरता हेतु कीट का प्रबंधन आवश्यक है।

रबी दलहनी फसलों के मुख्य कीट

1. तेला– (*अम्रास्का बिगूट्टुला बिगूट्टुला*)

क्षति का स्वरूपः यह बहुभक्षी कीट है जो दलहनी फसलों के फूलों में लगने मे लगने वाला यह मुख्य कीट है। इसका रंग काला होता है। यह कीट फूलों को खरोच देता है तथा उससे निकले रस को चूसता है, जिससे पौधों की बढवार रूक जाती है। फलस्वरूप फूल कमजोर एवं झड़ जाते है। इनकी संख्या प्रति फूल 7 से 8 पायी जाती है।

2. एफिड या माहू– (*एफिस क्रकिवोरा*)

क्षति का स्वरूपः इस कीट के शिशु काले रंग के होते हैं, शिशु व वयस्क पत्तियों व टहनियों व शाखाओं पर भारी संख्या में पाए जो हैं। ये पौधों के पत्तियों, शाखाओं आदि से रस चूसते हैं, जिससे पौधों पर फफूंद लग जाती है।

3. सफेद मक्खी– (*बेमीसिया टेबेसाई*)

क्षति का स्वरूपः इस कीट के प्रौढ़ तथा शिशु दोनों पत्तियों से रस चूसतें हैं तथा पत्ती के ऊपर मधु का स्त्राव छोड़ते है, जिससे काले रंग के कवक का आक्रमण हो जाता है, जिससे पत्तियों में प्रकाष संषलेषण वाधित हो जाता हैं व पत्तियाँ पीली पड़कर नीचे गिरने लगती हैं, तथा फूल एवं फलिया झड़ जाती हैं। यह कीट फसल में पीला शिरा मोजेक नामक विषाणु जनित रोग फैलाता है।

4. चित्तीदार फली भेद कीट– (*मरूका विटराटा*)

क्षति का स्वरूपः इस कीट की सूडी हरें रंग की काले सिर वाली होती है। इस कीट के शरीर पर काले धब्बे पाये जाते है । मादा कीट अण्ड़ें, फूल, कली एवं फलियों पर देते है। सूड़ी पहले पत्तियों, फूलो तथा बाद में फलियों को खाती है। इसकी सूंडी फूलों तथा फलियों पर जाल बनाते है। इस कीट से लगभग 15–20 प्रतिशत तक फसल की उत्पादन पर प्रभाव पड़ता हैं।

5. कटवा लट : *(एग्रोटिस एपसिलॉन)*

क्षति का स्वरूपः इस कीट की लटें रात्रि में भूमि से बाहर निकल कर छोटे–छोटे पौधों को सतह के बराबर से काटकर गिरा देती हैं।

6. मटर की तना मक्खी *(ओपियोमिया फैजियोली)*

क्षति का स्वरूपः यह छोटी एवं काले रंग की मक्खी होती है। इस कीट की मादा कोमल तनो एवं शाखाओ मे छेद करके अण्डे देती है। अण्डे से 2–4 दिन बाद लारवा निकलते है, जो सुंरग बनाकर मध्यशिराओं से होते हुये तने मे प्रवेश कर जाते है। इस कीट की मैगट अवस्था ही सर्वाधिक हानिकारक होती है। ये तने की कोशिकाओ को खाकर नष्ट कर देती है जिससे तना सूखने लगता है और पूरा पौधा सूख जाता है।

7. तम्बाकू की सूँड़ी – (*स्पोडोपटेरा लिटुरा*)

क्षति का स्वरूपः इस कीट के लार्वा हरे मटमैले रंग के होते हैं व शरीर पर हरे पीले रंग की धारियॉ पायी जाती हैं। इस कीट की सूड़ी मसूर की पत्तियों को नुकसान पहूचाती हैं व उनके हरे पदार्थ को खाती है।

8. फली छेंदक – (*हेलिकोवरपा आर्मीजेरा*)

क्षति का स्वरूपः यह एक बहुभक्षी कीट है, जो दलहन के अलावा अन्य फसलों में भी अत्याधिक क्षति करता है। इस कीट की हानिकारक अवस्था सूंड़ी होती है जो हल्के हरे –भूरे रंग 3 से 5 सेमी. लम्बी होती है, तथा शरीर के ऊपरी भाग पर भूरे रंग की धारियॉ पायी जाती है। वानस्पतिक अवस्था में सूंड़ी पत्ती एवं शाखाओं को खाती है लेकिन फलों की अवस्था में यह कली तथा फलियों में छेंद करके नुकसान पहॅचाती है। फली को खाते समय प्रायः इसका सिर फली के अन्दर की तरफ तथा शरीर का भाग बाहर की तरफ लटका रहता हैं। एक सूँड़ी 30–40 फलियों को नुकसान पहुँचाती हैं ।

9. दीमक (*ओडोन्टोटर्मिस ओबेसेस*):–

क्षति का स्वरूपः दीमक चने के तने एवं जड़ो को छेदकर उसको नष्ठ कर देती है। जिससे पौधा सूख जाता है। यह सूखे की अवस्था में पौधो को नष्ट करती है।

समन्वित कीट प्रबन्धन

- ✓ गर्मी में गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे जमीन में छिपे कीटों की अन्य अवस्था नष्ट हो जाए है।
- ✓ खेत को खरपतवार से मुक्त रखें जिससे कीटों का प्रकोप कम होता है।
- ✓ संतुलित उर्वरक का प्रयोग करे। नत्रजन का अधिक प्रयोग करने से फसल कीटो तथा रोगों के प्रति सुग्राही होता हैं।
- ✓ बालदार सूंडी के अण्ड़े तथा प्यूपा को एकत्र करके नष्ट कर देना चाहिए।
- ✓ कीट प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करना चाहिए।
- ✓ खड़ी फसल में प्रकाश प्रपंच, फेरोमोन प्रपंच 4–5 प्रति एकड़ के साथ –साथ चने की सूड़ी, रोयेंदार सूड़ी तथा चित्तीदार सूड़ी के लिए ट्राइकोग्रामा अंण्ड परजीवी को खेत में छोड़ना चाहिए।
- ✓ थ्रेप्स और सफेद मक्खी नियंत्रण के लिए पीला चिपचिपा जाल प्रति एकड़ 15 सेमी0 4–5 जाल प्रति एकड़।
- ✓ फसल में 5 प्रतिशत नीम की गिरी का छिड़काव करने से कीटो का प्रकोप कम होता है।
- ✓ समस्त प्रकार की सूड़ियों के नियंत्रण के लिए एन.पी.वी. की 250 से 300 एल.ई. मात्रा प्रति हैक्टेयर 600–800 लीटर पानी में घोलकर 0.1 प्रतिशत टीपोल या 0.5 प्रतिशत गुड़ के साथ मिलाकर छिड़काव करें।
- ✓ रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड की 2 ग्राम/किग्रा बीज में मिलाकर उपचार करना चाहिए ।
- ✓ खड़ी फसल में रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड के 0.025 प्रतिशत काघोल या थायोमेथोक्जाम की 100 ग्राम प्रति हैक्टेयर या एसिटामिप्रिड की 100 ग्राम/हैक्टेयर की दर से किसी एक का छिड़काव करे।
- ✓ एक रसायन का प्रयोग बार–बार न करें। क्योंकि इससे कीटों में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- ✓ काटने –कुतरने वाले कीटों के प्रकोप को कम करने के लिए इण्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. की 200 मिली. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ✓ खड़ी फसल मे दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरपाइरिफॉस 20 ई0सी0 4 लीटर प्रति हे0 सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें। यदि फसल छोटी अवस्था में है तो उपरोक्त बताये गये किसी एक कीटनाशक की मात्रा को 50 किग्रा0 सूखे रेत में मिलाकर प्रति हे0 खेत मे बखेर कर सिंचाई कर दें।